P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-10, ISSUE-1 August -2021
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

निराला के कथा साहित्य में नारी चित्रण
Female Portrayal in Nirala's Fiction

Paper Submission: 07/08/2021, Date of Acceptance: 12/08/2021, Date of Publication: 25/08/2021

माला
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
राजकीय रज़ा स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रामपुर,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे।नारी समस्या का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जो उनके ज्ञान चक्षु से ओझल हो पाया हो। कविता और कथा दोनों ही क्षेत्रों में उनका समान अधिकार था। उन्होंने नारी की हर एक समस्या को अपने ही अंदाज में देखा है। उनके कथा साहित्य में नारी की विशेष समस्याओं का केवल चित्रण ही नहीं अपितु उसका समाधान भी है। वह नारी को सफल, सक्षम, समर्थ एवं आत्मनिर्भर बनाने की भी वकालत करते हैं। निराला के कथा साहित्य में झाँककर देखें तो स्त्री के महिमामयी स्वरूप के प्रति पुरुष वर्ग की सद्भावना और विश्वसनीयता का पूर्ण परिचय मिलता है। वर्तमान समय में स्त्री की अधोगति और उसके मूल में निहित कारणों का परिचय निराला अपने उपन्यासों में देते हैं, साथ ही भविष्य के लिए एक आशापूर्ण संदेश देते नजर आते हैं। निराला का यह संदेश इसी युग के लिए ही नहीं बल्कि युग-युग की नारी शक्ति के लिए वांछनीय है। निराला की नारी विषयक चेतना जितनी ही प्राचीन दिव्यता की तरफ एकनिष्ठ है, उतनी ही क्रांतिकारी नवीनता के प्रति आस्था से भरी हुई है। स्त्री जाति के अभ्युदय पर ही भारत के अभिनव समाज का भविष्य निर्भर है। निराला के कथा साहित्य में स्त्रियों का एक बड़ा समुदाय है जो निरक्षर होने के कारण परवशता के निम्नतम स्तर तक पहुँच गया है, जो मानवीय संवेदनाओं से विहिन है। दूसरों के छिद्रान्वेषण और अपने बड़प्पन के अहंकार में विक्षिप्त जैसा है तथा पारस्परिक ईर्ष्या एवं घृणा के अंधकार से परेशान है। निराला के यहाँ भारतीय नारी की सनातन दिव्यता और वर्तमान अधोगति दोनों चित्र मिल जाएँगे। निराला ने स्त्री के हृदय को बहुत विशालता और सहानुभूति के साथ अंकित किया है। जीवन के कठिनतम संघर्षों में भी उनकी विजयिनी जैसी दृढ़ चेतना लक्ष्य तक पहुँचती दिखाई देती है। निराला ने विकृत समाज और परम्परा की लीक पर चलने वाले साहित्य में एक नयी तरह की शक्ति और चेतना भरने की कोशिश की है। इसके लिए उन्होंने 'वैचारिक-क्रान्ति' का सहारा लिया और समाज को एक नयी सोच प्रदान करने का प्रयास कियाहै।

Pandit Suryakant Tripathi was a unique and versatile writer. There is no such aspect of the women's problem which has been lost from his eyes. He had equal authority in both poetry and fiction. He has seen each and every problem of women in his own style. In her fiction, there is not only a depiction of the special problems of women, but their solution is also there. He also advocates to make women successful, capable, capable and self-reliant. If you look into the fiction of Nirala, you get a full introduction of the goodwill and credibility of the male class towards the glorious nature of the woman. In his novels, Nirala introduces the degeneration of women and the reasons behind its origins, as well as giving a hopeful message for the future. This message of Nirala is desirable not only for this era but for the women power of the ages. Nirala's feminine consciousness is as devoted to the ancient divinity as it is full of faith in revolutionary innovation. The future of India's innovative society depends only on the emergence of women's caste. In Nirala's fiction, there is a large community of women who, due to being illiterate, have reached the lowest level of paravata, which is devoid of human sensibilities. Deranged in the arrogance of others and his own nobility, and tormented by the darkness of mutual jealousy and hatred. In Nirala's place one will find both the eternal divinity of the Indian woman and the present degradation. Nirala has captured the woman's heart with great magnanimity and sympathy. Even in the most difficult struggles of life, her victorious consciousness like her is seen reaching the goal. Nirala has tried to fill a new kind of power and consciousness in the literature that runs on the rut of the perverted society and tradition. For this he resorted to 'ideological-revolution' and has tried to provide a new thinking to the society.

मुख्य शब्द / Keywords विमर्श, वैचारिक-क्रान्ति, आत्मानुभूति, वेश्या, अधोगति, आत्माभिमान, वल्कल, रियलिज्म, पराधीनता, विद्रूपता।

Deliberation, Ideological Revolution, Self-realization, Prostitute, Degradation, Self-conceit, Volition, Realism, Subordination, Squalor.

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य के देदीप्यमान नक्षत्र पंडित सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार थे। जिनका व्यंितव एवं कृतित्व दोनों वैविध्य युक्त और आत्मबल से परिपूर्ण है। साहित्य में गुम्फित गहन विचार उनके जीवन की आत्मानुभूति के प्रतिफल हैं। नारी समस्या का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जो उनके ज्ञान चक्षु से ओझल हो पाया हो। कविता और कथा दोनों ही क्षेत्रों में उनका समान अधिकार था। उन्होंने नारी की हर एक समस्या को अपने ही अंदाज में देखा है। उन्होंने कबीर की भाँति बाह्य आडम्बरों एवं रूढ़ियों पर निर्मम प्रहार किया है। वे तुलसी का काव्य कला को लेकर अवतरित हुए थे। उनके साहित्य में उनके जीवन संघर्ष एवं दुखों की अद्भुत गाथा है। वे सामाजिक कवि एवं कथाकार हैं। इसलिए उनकी कविता, कहानी और उपन्यासों में समाज के जनसाधारण वर्ग का यथार्थ चित्रण मिलता है। जिस भारतीय समाज में कभी नारी को पूजनीय स्थान प्राप्त था, वही नारी अब पद दलित एवं शोषित होकर समाज में अभिशप्त जीवन जीने को विवश क्यों है? परिवार और समाज की कलुषित व्यवस्थाओं ने नैतिकता, धार्मिकता, मर्यादा, मान्यता, परम्परा और संस्कार की आड़ में नारी से उसके सम्मान और अधिकार कब से छीन लिए इसका पता उसे चला ही नहीं। वर्तमान में नारी मां, पत्नी, कन्या, बहन, मित्र, कर्मचारी, मजदूर आदि किसी भी रूप में सुरक्षित नहीं है। प्रत्येक क्षेत्र में कड़े संघर्ष का सामना करना पड़ता है। निराला की कथाओं में इसी नारी संघर्ष की गाथा है। उनकी अधिकांश कहानियाँ एवं उपन्यास नायिका प्रधान हैं। उन्होंने विशिष्ट नारी पात्रों की सर्जना करके परम्परागत बंधनों को तोड़कर उनके सामाजिक अधिकारों की रक्षा की है। उनके नारी पात्रों में लज्जा, विनय, क्षमा के साथ-साथ साहस, धैर्य वाक्पटुता आत्माभिमान, विलक्षण बौद्धिक प्रतिभा से सम्पन्न हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

स्त्री और पुरुष दोनों ही समाज के अभिन्न अंग हैं। सृष्टि एवं सामाजिक विकास की गति दोनों मिलकर सुनिश्चित करते हैं, किंतु सामाजिक कुप्रथाओं, बाह्याडम्बरों एवं विषम मान्यताओं से युक्त तथा दोहरी मानसिकता से ग्रस्त पुरुष समाज ने नारी की समाज में उचित स्थान ना देकर उसका शोषण और दमन किया। इसी दमन और शोषण के विरुद्ध कवियों, साहित्यकारों एवं समाज सुधारकांे ने समय-समय पर नारी को उसका सम्मान वापस दिलाने तथा उसको शोषण से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्ष किया। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का इस संघर्ष में प्रमुख स्थान है। उन्होंने न केवल अपनी कविताओं में अपितु उपन्यास एवं कहानियों में भी नारी मुक्ति हेतु संघर्ष किया है। उनके कथा साहित्य में नारी की विशेष समस्याओं का केवल चित्रण ही नहीं अपितु उसका समाधान भी है। वह नारी को सफल, सक्षम, समर्थ एवं आत्मनिर्भर बनाने की भी वकालत करते हैं। निराला के कथा साहित्य में उक्त तथ्यों का उद्घाटन करना ही इस शोधपत्र का प्रमुख उत्स है।

साहित्यावलोकन

नारी के उत्थान एवं समाज में उसे समानता के धरातल पर पदस्थापित करने हेतु अब तक ना जाने कितने कवियों, लेखकों, साहित्यकारों, चिंतकों एवं समाज सुधारकों ने निश्चल प्रयास किया। अनेक कविता, कहानी, उपन्यास, लेख, शोध पत्र एवं पुस्तकें प्रकाशित हुई। ऐसा नहीं है कि इसका नारी उत्थान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, प्रभाव तो अवश्य पड़ा है किंतु आज भी बहुत कुछ विसंगतियाँ हैं जिनका अनुसंधान किया जाना शेष है। यदि महाप्राण निराला के नारी विषयक दृष्टिकोण को समाज आत्मसात कर ले तो नारी को दमन, शोषण एवं अत्याचार से मुक्ति मिल सकती है। समाज में उसे समानता के धरातल पर पुनः प्रतिष्ठितकिया जा सकता है।

महाप्राण निराला के नारी विषयक दृष्टिकोण को लेकर अब तक अनेक पुस्तकें, शोध पत्र, एवं लेख प्रकाशित हो चुके हैं। पुस्तकों के अन्तर्गत 'निराला की साहित्य साधना',[1] 'क्रांतिकारी कवि निराला',[2], निराला काव्य में नारी की अस्मिता[3] एवं 'निराला रचनावली'[4] जैसी अनेक पुस्तकों की रचना हुई किंतु इनमें समग्र रूप से उनके नारी विषयक दृष्टिकोण को चित्रित नहीं किया गया। शोध पत्रों के अंतर्गत 'क्रांतिकारी निराला के साहित्य में स्त्री विमर्श'[5] एवं 'इवेलुएशन आफ

निरालाज पोएट्री इन द कान्टेस्ट ऑफ पोपुलिस्टिज्म'[6] तथा लेखों के अंतर्गत 'निराला का मानवतावाद'[7] आदि प्रकाशित हुई। किन्तु इनमें भी उनके कथा साहित्य में नारी विषयक दृष्टिकोण को पूर्ण न्याय नहीं मिल सका। प्रस्तुत शोधपत्र में महाप्राण निराला के कथा साहित्य में वर्णित नारी विषयक दृष्टिकोण को पुनर्व्याख्यायित करने का प्रयास किया जायेगा।

निराला के कथा साहित्य में नारी चित्रण

यदि भारत के सांस्कृतिक इतिहास पर ठीक से नजर डाली जाये तो नारी का स्थान गौरवपूर्ण दिखाई देता है। निराला के कथा साहित्य में झाँककर देखें तो स्त्री के महिमामयी स्वरूप के प्रति पुरुष वर्ग की सद्भावना और विश्वसनीयता का पूर्ण परिचय मिलता है। वर्तमान समय में स्त्री की अधोगति और उसके मूल में निहित कारणों का परिचय निराला अपने उपन्यासों में देते हैं, साथ ही भविष्य के लिए एक आशापूर्ण संदेश देते नजर आते हैं। निराला का यह संदेश इसी युग के लिए ही नहीं बल्कि युग-युग की नारी शक्ति के लिए वांछनीय है। निराला की नारी विषयक चेतना जितनी ही प्राचीन दिव्यता की तरफ एकनिष्ठ है, उतनी ही क्रांतिकारी नवीनता के प्रति आस्था से भरी हुई है। स्त्री जाति के अभ्युदय पर ही भारत के अभिनव समाज का भविष्य निर्भर है। निराला के उपन्यासों में स्त्री के प्रति लेखक का जो मनोभाव होता है, उसके रूप और शील के चित्रण में निराला का दृष्टिकोण भिन्न प्रकार का है। निराला ने अपने कथा साहित्य के माध्यम से स्त्रियों के भीतर यह जागृति फैलाने की कोशिश की है कि वह समस्त कार्य का संचालन अपने हाथों से करें। दूसरों के ऊपर निर्भरता जीवन में ही मृत्यु केसमान होती है।

इस समाज में व्याप्त कुरीतियों और अंधविश्वासों के बारे में तथ्यपरक ज्ञान यथार्थवादी दृष्टिकोण से ही संभव है। हम चाहें तो कबीरदास को हिन्दी का प्रथम यथार्थवादी रचनाकार मान सकते हैं। कबीरदास ने अपनी लेखनी के माध्यम से समाज में व्याप्त खोखलेपन को अपनी लेखनी द्वारा उघारने का प्रयास किया है। "यथार्थवादी जीवन की समग्र परिस्थितियों के प्रति ईमानदारी का दावा करते हुए लेखक प्रायः मनुष्य की हीनताओं और कुरुपताओं का चित्रण करता है। यथार्थवादी कलाकार जीवन के सुंदर अंश के साथ-साथ असुंदर अंश का चित्रण भी करना चाहता है।"[8] आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का मानना है कि यथार्थवाद रियलिज्म का हिन्दी रूपान्तरण है। "यथार्थवाद का मूल सिद्धान्त है वस्तु को उसके यथार्थ रूप में चित्रित करना, न कि उसे कल्पना के रंगों से अनुरंजित करना और न किसी धार्मिक या नैतिक आदर्श के लिए उसे काँट-छाँटकर उपस्थित करना"[9]

आधुनिक युग में अंग्रेजों का साहचर्य बढ़ने और वैज्ञानिक चेतना के प्रसार के साथ स्त्री के जीवन में परिवर्तन आया। मनुस्मृति में स्त्रियों और शूद्रों के लिए वेद का अध्ययन वर्जित कर दिया गया था। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसका विरोध किया और स्त्रियों की उचित शिक्षा-दीक्षा देने की वकालत की। स्वामी जी की इस प्रगतिशील सोच के बारे में आलोच्य कवि निराला लिखते हैं- "आज सभी शिक्षित मनुष्य जानते हैं कि भारत के अधःपतन का मुख्य कारण नारी जाति का पीछे रह जाना है, यह संग्राम में पुरुष का साथ नहीं दे सकती हैं। पहले से ऐसी निरावलम्ब कर दी जाती है कि इसमें क्रियाशीलता नहीं रह जाती हैं, पुरुष के न रहने पर सहारे के बिना तरह-तरह की तकलीफें झेलती हुई वह कभी-कभी दूसरे धर्म को स्वीकार कर लेती है। स्वामी जी ने वेदों के उद्धरण द्वारा सिद्ध किया है कि स्त्रियों की शिक्षा अध्ययन आदि वेद विहित हैं। उनके लिए ब्रह्मचर्य का भी विधान है। स्वामी जी की इस महत्ता को देखकर मालूम हो जाता है कि स्त्री समाज को उठाने वाले पश्चिमी शिक्षा प्राप्त पुरुषों से वह बहुत आगे बढ़े हुए हैं। वह संसार और मुक्ति दोनों प्रसंगों में पुरुषों के बराबर नारियों को अधिकार देते हैं।"[10] आधुनिक युग में ब्रह्म और आर्य समाज ने परम्परागत रूढ़ियों के प्रति उपेक्षा का भाव जाहिर किया और स्त्री के लिए शिक्षा-दीक्षा के सुलभ अवसर उपलब्ध कराने की बात कही लेकिन समुचित रूप में स्त्री समस्याओं पर लोगों का ध्यान केन्द्रित नहीं हो सका। स्त्री के जीवन में व्याप्त बहुतेरी समस्याओं ने सामाजिक प्रगति को अवरूद्ध किया हुआ था। निराला ने अपने उपन्यास लेखन के माध्यम से कई समस्याओं को उद्घाटित करने का प्रयास किया है। निराला के उपन्यास में वर्णित नारी चेतना को ध्यान में रखते हुए यदि हम उन समस्याओं को स्थूल रूप में देखना चाहे तो उसके कई स्तर उभरकर सामने आ सकते हैं।

उपन्यास विधा को वर्तमान समय में सबसे सशक्त साहित्यिक माध्यम माना जा रहा है। किसी भी साहित्य का मूल उद्देश्य युगीन समस्याओं का समाधान करना होना चाहिए। जो साहित्य समस्याओं का हल न दे सके बल्कि समस्या को ज्यों का त्यों प्रस्तुत करें उसे हम उच्चकोटि के साहित्य की श्रेणी में नहीं रख सकते हैं। निराला ने अपने कथा लेखन में मानवता की सामूहिक जाति से सम्बन्ध रखने वाली समस्याओं का यथोचित समाधान करने का प्रयास किया है। सबसे पहले हम वेश्या स्त्री की समस्या निराला के उपन्यास में देखने की कोशिश करेंगे। इतिहास में झांककर देखें तो शकुन्तला का परिचय वेश्या स्त्री के रूप में मिलता है। लेकिन उसके सद्गुणों के सत्प्रभाव का जो चित्र महाकवि कालिदास ने निरूपित किया है। निराला उसे राष्ट्रमाता की गरिमा की दृष्टि से देखते हुए लिखते हैं "संस्कृत साहित्य में जो विधाता की आदि शृंगार सृष्टि बन पादपों के पाद-मूल में खडी सखियों के साथ आलबालों में जल सीचकर कौतुकालाप करती हुई, महाकवि की कल्पना उज्ज्वल प्रतिमा शकुन्तला वन्य वल्कलों से अपने पीनयुक्त भरे हुए नवीन यौवनांगों को ढके सलाज-सप्रेम दृष्टि से चतुर्दिक चंचल हेरती हुई मिलती हैं। वह केवल नाटक की प्रधान नायिका या पुराण की कल्पित पात्रा ही नहीं, वह तत्कालीन राष्ट्र की सर्वोत्तम आदर्श नारियों की ज्योतिर्मयी साहित्य की प्रधान अभिनेत्री है। संस्कृत साहित्य में दूसरी शकुन्तला नहीं। उसके सरस, कोमल, मधुर उपाख्यान के स्वर्गीय प्रेम का रसास्वादन करने के साथ ही उस समय के एकक्षत्र सम्राट भरत की जन्मदात्री थी। भारत की साम्राज्ञी भारत की सम्राट माता शकुन्तला के चरित्र में भारत राष्ट्र की आदर्श नारियों को अनेक प्रकार की शिक्षाएँ मिलती है।"[11] वेश्या स्त्री के जीवन की समस्या और उसके समाधान का यथार्थ चित्रणनिराला अपने साहित्य में करते हैं।

निराला का पहला उपन्यास 'अप्सरा' जनवरी 1931ई0 में प्रकाशित होता है। उपन्यास में वेश्या स्त्री को एक समस्या के रूप में सामने लाया गया है। सामाजिक जीवन में सामान्यतः वेश्या स्त्री को घृणा और अविश्वास की दृष्टि से देखा जाता रहा है। जिस उदात्तता के साथ निराला कनक की माँ सर्वेश्वरी को प्रस्तुत करते हैं उतनी ही आस्था के साथ कनक का भी चित्रांकन किया है। वेश्या स्त्री भी कला के आकर्षण से परिपूर्ण होकर सामाजिक जीवन में ऐश्वर्य का भोग कर सकती है। जब स्त्री के भौतिक प्रेम में एकनिष्ठता व्याप्त हो जाती है तब वह वेश्या की सामान्य कोटि से ऊपर उठकर साध्वी नारी के उदात्त आदर्श को प्राप्त करलेती हैं।

निराला ने वेश्या स्त्री की यथार्थ पृष्ठभूमि का चित्रण जितनी स्वाभाविकता से किया है, उतनी ही सजगता से उसके आदर्श रूप को भी स्थापित किया है। वेश्या समाज में सुधार की अपेक्षा नवनिर्माण की आवश्यकता है? जिससे स्त्री सामान्य जन के शारीरिक सुख का साधन न बनकर अपने साथी का चयन स्वतंत्रता से कर सके। चरण की स्वतंत्रता होने पर वह वेश्याजाति पर लगे कलंक को मिटाकर समाज के उन्मूलन में अपना योगदान दे सकती है। इसलिए निराला उपन्यास में कनक की शादी राजकुमार जैसे कुलीन व्यक्ति से कराकर सामाजिक रूढ़ियों को तोड़ने की प्रेरणा देते हैं।

निराला का एक दूसरा उपन्यास 'चोटी की पकड़' है। इसमें कथाकार एजाज का चरित्रांकन वेश्या नारी के रूप में करते हैं। एजाज का परिचय देते हुए निराला कहते हैं- "वह एक बड़े तवायफ की बेटी है। शिक्षा कायदे से हुई है। उर्दू बंग्ला और अंग्रेजी अच्छी जानती है। गाने-बजाने की भी बड़े-बड़े उस्तादों से तालीम मिली है। नये पुराने दोनों तरह के गाने जानती है। बेजोड सुन्दरी गोराई काफी निखरी हुई। उंगलियाँ, हाथ, पैर, गाल, नाक, आँखें, भौंहे, सब लम्बी जैसे चम्पा की कली। पहनावा भी वैसा ही लंबा। उम्र 30 साल की होगी। सालभर से राजा महेन्द्र प्रताप की नौकर है। दो हजार महीना लेती है।"[12]

भारतीय समाज में बाल विवाह और विधवा-विवाह की परम्परा लम्बे समय से रही है। स्त्री को वैधव्य (विधवा) जीवन व्यतीत करने के लिए हमारी सामाजिकरूढ़ियाँ बहुत हद तक जिम्मेदार

निराला एक जागरूक कथाकार है। अपने उपन्यासों में ज्वलन्त समस्याओं को उठाते हैं। स्त्री समस्याओं को उद्घाटित करने में बहुत उदारता से काम किया है। स्त्रियाँ जो सदियों से उपेक्षित और पददलित है उनके उत्थान का प्रयास किया है। विधवा स्त्री की कारुणिक व्यथा की तरफ इशारा करते हुए निराला लिखते हैं- "प्रतिदिन भारतवर्ष का आकाश स्त्रियों के क्रन्दन से गूंजता

रहता है। युवती विधवाओं के आँसुओं का प्रवाह प्रतिदिन बढ़ता जाता है। प्राचीन शीर्णता ने नवीन भारत को मृत्यु की तरह घेर रखा है। घर की छोटी सी सीमा में बंधी हुई स्त्रियाँ आज अपने अधिकार, अपना गौरव देश तथा समाज के प्रति अपना कर्तव्य सब कुछ भूली हुई हैं। उनके साथ जो पाशविक अत्याचार किये जाते हैं, उनका कोई प्रतिकार नहीं होता। वे चुपचाप आँसुओं को पीकर रह जाती हैं।"[13] निराला अपने युगीन और पूर्ववर्ती साहित्यकारों की भाँति विधवा स्त्री का चित्रण करके निकल नहीं जाते बल्कि अपने लेखन में विधवा विवाह का समर्थन भी करते हैं। वीणा (अलका) अपनी मनःव्यथा को महसूसती हुई सोचती है- "विधवा कितनी असहाय और अनावश्यक इस संसार के लिए है... क्या विधवा जैसी दुःखी विधाता की दूसरी भी सृष्टि होगी, जो सखियों में भी खुले प्राणों से बातचीत नहीं कर सकती, भोग सुख वाले संसार के बीच में रहकर भी भोग-सुख से जिसे विरत रहना पड़ता है, आँख के रहते हुए भी जिसे चिरकाल तक दृष्टिहीन होकर रहना पड़ता है।"[14] दरअसल यह पीड़ा वीणा की कम निराला की अधिक है। वीणा के माध्यम से निराला ने अपने मनोभावों के दर्द को अभिव्यक्ति प्रदान की है। निराला अपने साहित्य में विधवा की समस्या को उठाते हैं तो इसके समाधान के तौर पर विधवा विवाह (पुनर्विवाह) को समस्या के समाधान के रूप में स्वीकारते भी हैं। निराला प्रेमचन्द की तरह आश्रम और अनाथालय की स्थापना नहीं करते हैं। सामाजिक रूढ़ियों को तोड़कर समस्या का हल प्रस्तुत करने का प्रयत्न करते हैं।

निराला का उपन्यास 'अलका' जनवरी 1933ई0 में प्रकाशित होता है। इसके अधिकांश संवाद तत्कालीन परिस्थितियों और वातावरण से तालुक रखते है। इसमें निराला समाज सुधार, देश की स्वतंत्रता आदि कठिन समस्याओं पर अपने विचार प्रकट करते दिखाई देते हैं। अलका उपन्यास में शोभा की प्रतिष्ठा दाँव पर इसलिए लगा दी जाती है कि उसके माँ-बाप व्याधिग्रस्त होकर चल बसे हैं। वह अपने जीवन में एकमात्र सहारा पति की प्रतीक्षा भी नहीं कर पाती क्योंकि कुछ सफेदपोश भेडिये उसका शील बेचकर धन कमा लेना चाहते हैं।

इस समाज में एक तबका ऐसा है जिसे अपने घर की बहू-बेटियों की इज्जत तो समझ आती है लेकिन दूसरों की बहू-बेटियों के साथ तरह-तरह के अमानुषिक अत्याचार करने में उसे किसी भी प्रकार की झिझक नहीं होती इस उपन्यास में निराला कहते हैं- "देहात की सुन्दरी विधवाएँ भ्रष्ट की हुई अविवाहिता युवतियाँ, एक मात्र माता जिनकी अभिभाविका थी और अपना खर्च नहीं चला सकती थी और इस तरह के लब्ध अर्थ से लड़की का धोखे से विवाह कर देना चाहती थी, लगान की छूट माफी आदि पाने की गरज से, कुटनियों के बहकावे में आकर चली जाती या भेज दी जाती थी।"[15] इस समाज में व्यक्ति गरीबी के कारण किस-किस तरह का अपराध करने पर मजबूर होता है और उसका देश स्त्री को झेलना पड़ता है।

1936ई0 में प्रकाशित निराला का उपन्यास निरूपमा को उनकी सर्वश्रेष्ठ कृति माना जाता है। उपन्यास में निराला प्रगतिशील और रूढ़िवादी समाज के परिप्रेक्ष्य में मनुष्य की प्रगति, उसकी अवनति तथा उसके जीवन और विचारधारा में होने वाले परिवर्तनों पर विचार किया है। निरूपमा में उसके मामा उसकी सम्पत्ति को हड़पना चाहता है। जबकि उनका पुत्र कुमार की संपत्ति हड़पना चाहता है। जिस गाँव में निरुपमा की जमीदारी है कुमार उसी गाँव में रहता है। विषम परिस्थिति बस कुमार की सारी सम्पत्ति गिरवी रख दी जाती है और उसे परिवार के भरण-पोषण हेतु शहर जाकर जूता पालिश का काम करना पड़ता है। गाँव के लोग इसके परिवार को विरादरी से बाहर कर देते हैं। उसकी माँ और भाई को कुएँ से पानी भी नहीं भरने देते। कुमार के भाई रामचन्द्र के मन में विचार उठता है- "मनुष्य-मनुष्य के प्रति इतना बड़ा वैर कर सकता है यह कभी उसकी कल्पना में नहीं आया था, उसके लिए गाँव भर के द्वार बन्द हैं। कोई उससे प्रीतिपूर्वक बोल नहीं बोलता। गाँव के कुओं से उसका पानी भरना बंद है। नाई, धोबी, कहार कोई अब उसकी प्रजा नहीं, उसका काम नहीं करते।" [16] कुमार जाति से ब्राह्मण है। समाज में उसकी जो दुर्गति हो रही है उससे छोटी जातियों और इस वर्ग की स्त्रियों की दुर्दशा के बारे में अनुमान लगाया जा सकता है।

1936 ई0 में ही प्रकाशित निराला का एक और उपन्यास 'प्रभावती' है। यह रोमांसवादी ऐतिहासिक उपन्यास है। इस उपन्यास के कथानक का समय सम्राट जयचन्द का है। इसमें

तत्कालीन समय की राजनीति का चित्रण किया गया है। जयचन्द के समय देश अनेक भागों में विभक्त था । विभिन्न रियासतों के राजा अपनी वीरता के मिथ्या दम्भ में एक दूसरे से लड़ रहे थे। पृथ्वीराज चौहान ऐसे राजा थे जो अन्य राजाओं को भी एकता के सूत्र में बाँधे रह सकते थे। उपन्यास की पात्र यमुना स्थिति के बारे में कहती हैं "गौरी हार खाकर भी चुप नहीं, अपनी शक्ति बढ़ाता ही जा रहा है। आश्चर्य नही हिन्दू संस्कृति पर मुसलमानों की विजय हो। उनमें हमसे अधिक एकता है।"[17] भारतीय इतिहास के उस युग पर हर समय अनिश्चय, अविश्वास और फूट का साम्राज्य छाया हुआ था। भारतीय राजा अपना दायित्व बोध भूल चुके थे कि अपने अधीनस्थ रियासतों की रक्षा ही नहीं बल्कि भारतवर्ष के रक्षा का दायित्व उन पर है। राम विलास शर्मा लिखते हैं- "निराला ने मध्यकाल की बर्बरता, उत्पीड़न और दासता को भावुकता की रंगीन चादर से ढक नहीं दिया। उन्होंने स्पष्ट में हिन्दुस्तान की पराजय के लिए सामन्तों के उत्पीड़न को दोषी ठहराया है।"18 इस प्रसंग में निराला ने तत्कालीन सामाजिक स्थिति पर भी अपनी नजर दौड़ायी है। भिन्न-भिन्न वर्गों, जातियों में विभक्त समाज की दशा बहुत ही सोचनीय थी। उपन्यास के माध्यम से निराला ने ब्राह्मणों के वर्गभेद और ढोंग की निस्सारता को भी उजागर किया है। स्त्रियाँ भी देश सेवा के लिए आगे बढ़ रही थीं, यमुना, सिंधु और प्रभावती इसका प्रमाण पेश करती है। उपन्यास में निराला ने तत्कालीन स्थिति का प्रमाण के साथ चित्र खींचने का पूरा प्रयास किया है।

स्त्री शक्ति की सर्वाधिक गौरवानुभूति ग्रामीण संस्कृति में ही हुई हैं। लेकिन मुस्लिम शासनकाल में स्त्रियों के प्रति वासनात्मक दृष्टि और दिखावटी आतंक का प्रसार जिस तीव्र गति से हुआ उसने स्त्री की शक्ति को अधोगति की पराकाष्ठा पर लाकर छोड़ दिया। 'अलका' उपन्यास में मनहारिन की छवि कुछ इस तरह प्रस्तुत की गयी है कि वह नारी हीनता के चरम पर दिखाई देती हैं। इस उपन्यास में निराला ने मनहारिन के माध्यम से ग्रामीण सामान्य अनपढ़ नारियों के भीतर गहरे तक बैठे अंधविश्वास का मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किया है।

निराला के कथा साहित्य में स्त्रियों का एक बड़ा समुदाय है जो निरक्षर होने के कारण परवशता के निम्नतम स्तर तक पहुँच गया है, जो मानवीय संवेदनाओं से विहिन है। दूसरों के छिद्रान्वेषण और अपने बड़प्पन के अहंकार में विक्षिप्त जैसा है तथा पारस्परिक ईर्ष्या एवं घृणा के अंधकार से परेशान है। निराला के यहाँ भारतीय नारी की सनातन दिव्यता और वर्तमान अधोगति दोनों चित्र मिल जाएँगे। निराला ने स्त्री के हृदय को बहुत विशालता और सहानुभूति के साथ अंकित किया है। जीवन के कठिनतम संघर्षों में भी उनकी विजयिनी जैसी दृढ़ चेतना लक्ष्य तक पहुँचती दिखाई देती है।

इस तरह निराला की स्त्री विषयक आस्था जितनी प्राचीन दिव्यता की तरफ एकनिष्ठ हैं उतनी ही क्रांतिकारी नवीनता के प्रति भी आस्थावान है। नारी प्राचीन दिव्यता, संयम के साथ समय के अनुरूप परिवर्तित होती हुई, सार्वभौमिक नारी चेतना का प्रतिनिधित्व करने पर ही भारत का मस्तक ऊँचा कर सकती है। स्त्री जाति के अभ्युदय पर भारत के अभिनव समाज का भविष्य बहुत कुछ निर्भर है। शैक्षिक विवशता को दूर करना निराला साहित्य की प्राथमिकता है। स्त्री के माध्यम से सामाजिक रूढ़ियों और परम्पराओं पर निराला ने जमकर प्रहार किया है तथा उन्हें तोड़ने की भरपूर कोशिश की है। प्रखर प्रगतिशील विचारों से युक्त निराला के कथा साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है कि वह समाज में हो रहे अत्याचार, शोषण और अन्याय के विरुद्ध समाज में जागरूकता का प्रसार करते हुए उसका समाधान भी प्रस्तुत करता है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी साहित्य को मनुष्य की सर्वोत्तम कृति बताते हुए कहते हैं-" सारे मानव समाज को सुंदर बनाने की साधना का ही नाम साहित्य है।"[19] जब हम किसी मानव समाज को सुंदर बनाने की बात करते हैं तो उसमें व्याप्त कुरुपता के तत्वों को बाहर निकाल फेंकना ही होगा। इस कुरुपता में अन्याय, अत्याचार, शोषण, दमन आदि और एक गतिशील समाज बनाने में अनेक तत्व सक्रिय होते हैं जिनका प्रतिरोध आवश्यक है। प्रतिरोध की इस प्रक्रिया में जो साहित्य जितना अधिक सक्रिय होगा समाज पर उसका उतनी ही मात्रा में अच्छा प्रभाव पड़ेगा। समाज की बुराईयों को दूर कर उसे साफ स्वच्छ और गतिशील बनाना ही साहित्य का परम धर्म होता है। एक जागरूक साहित्यकार अथवा कथाकार इन विद्रूपताओं से संघर्ष करता है और उसे ऐसी

चिंतनधारा से सम्पृक्त करता है कि लोगों में इन बुराइयोंसे लड़ने की शक्ति पैदा हो सके।

निराला ने विकृत समाज और परम्परा की लीक पर चलने वाले साहित्य में एक नयी तरह की शक्ति और चेतना भरने की कोशिश की है। इसके लिए उन्होंने 'वैचारिक-क्रान्ति' का सहारा लिया और समाज को एक नयी सोच प्रदान करने का प्रयास किया है। जो पुरुषार्थ का अंतिम सोपान 'मोक्ष' है वह निराला के साहित्य में मुक्ति है। इस मुक्ति के विभिन्न रूप हैं- राजनीतिक और आर्थिक पराधीनता से मुक्ति, अशिक्षा, अज्ञान, कुसंस्कारों और ऊँच-नीच की भावना से मुक्ति। धर्म, अर्थ, काम उस मुक्ति या मोक्ष के चरण मात्र हैं। निराला इन आदर्शों की सम्मिलित रूप में अपने कथा साहित्य में व्याख्या देते हुए दिखाई देतेहैं।

निराला के विद्रोही व्यक्तित्व ने स्त्री पराधीनता को कभी स्वीकार नहीं किया कुछ अपवादों के अतिरिक्त निराला ने अपने अधिकांश उपन्यासों में स्त्री समस्या को चित्रित किया है। शोषित, पीडित और लांक्षित स्त्री की मर्यादा और उसके स्वत्व की रक्षा करने का भाव निराला की संवेदना का प्रमुख पक्ष है। स्त्री का सम्मान ही हमारी संस्कृति का परम पवित्र आदर्श हैं। निराला के कथा साहित्य में जहाँ भी स्त्री समस्या का चित्रण हुआ है वह सब हमारी संस्कृति बोध से जुड़ा हुआ है। स्त्री देवी है, शक्ति है, प्रकृति है। निराला द्वारा स्त्री सौन्दर्य के अंकन में रूप, रस, बोध, शब्द, स्पर्श का अपूर्व योगदान है। यह सौन्दर्यांकन विराट सांस्कृतिक फलक पर अवस्थित है। गद्य और काव्य दोनों ही विधाओं में नारी अपने अनेक रूपों में उभरकर आती है, वह भी हर बार नयी कला के साथ। स्त्री का उद्धार संस्कृति का उद्धार हैं। निराला अपने कथा साहित्य में स्त्री को मनुष्य के मनोरंजन का साधन मात्र बनाकर प्रस्तुत नहीं करते हैं। निराला की स्त्रियाँ विजयिनी शक्ति का प्रतीक हैं और उनकी वन्दनीय प्रकृति भी दिखाई देती है। उन्होंने अपने कथा साहित्य में स्त्री की विभिन्न समस्याओं को उभारते हुए उसका समाधान प्रस्तुत किया है। महाप्राण निराला का संघर्षशील विराट व्यक्तित्व और उनका संवेदनशील हृदय स्त्री को अभिशप्त जीवन से मुक्ति दिलाने की पुरजोर वकालत करता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शर्मा, रामविलास- निराला की साहित्य साधना, खण्ड-1,2,3, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1990*
2. *सिंह, बच्चन- क्रान्तिकारी कवि निराला, विश्वद्यालय प्रकाशन चौक वाराणसी, 1992*
3. *यादव, सत्यंवदा- निराला काव्य में नारी अस्मिता, पराग प्रकाशन कानपुर, 2018*
4. *नवल, नन्द किशोर-निराला रचनावली, 1 से 8, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली-2014*
5. *सुमन-क्रान्तिकारी निराला के साहित्य में स्त्री विमर्श, ीबेंीतण्बवउध्2019ध्04ध्01ध् क्रान्तिकारी-निराला-साहित्य*
6. *patel, kalpesh B.-evaluation of Nirala's poetry In the context of populistism, IJRAR international journal of research and analyticalrewiews-vol-6, issue-1-2019*
7. *सिंह, सरद- निराला का मानवतावाद,sharadakshara.blogspot.com/feb2017*
8. *धीरेन्द्र वर्मा, हिन्दी साहित्य कोश, ज्ञानमण्डल वाराणसी, 1955, पृ0-660*
9. *आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का इतिहास, वाणी प्रकाशन 2008 पृ०-26*
10. *सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' प्रबन्ध प्रतिमा (महर्षि दयानन्द सरस्वती और युगान्तर). 1993, पृ0-40-42*
11. *सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', 'प्रबन्ध पदम' (राष्ट्र और नारी). 1991, पृ०-66-67*
12. *सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला चोटी की पकड़, राजकमल प्रकाशन 2010, पृ०-21*
13. *सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला प्रबन्ध प्रतिमा (बाहरी स्वाधीनता और स्त्रियों), पृ०-45ः*
14. *सूर्यकान्त त्रिपाठी अलका, राजकमल प्रकाशन, 2007. पृ0-45*
15. *अलका, निराला ग्रंथावली, भाग-2, 2008, पृ0-165*
16. *सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', 'निरुपमा', राजकमल प्रकाशन, 1936, पृ0-59*
17. *सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', 'प्रभावती', राजकमल प्रकाशन, 1936, पृ०-59*
18. *राम विलास शर्मा, 'निराला, राजकमल प्रकाशन, 1990 पृ0-142*
19. *हजारी प्रसाद द्विवेदी, कल्पलता, राजकमल प्रकाशन, 2007, पृ0 143*